गुरुवाणी

आप उस लायक है तो ऐसा नहीं है कि वह आपको कुछ नहीं देगा। वह गुरु अवश्य देगा।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक १५, वाराणसी। शनिवार १५ अगस्त २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

गुरु-पूर्णिमा महोत्सव

अघोराचार्य बाबा कीनाराम सेवा संस्थान के बैनर तले हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी क्रींकुण्ड स्थल, शिवाला, वाराणसी पर आषाढ़ मास की पूर्णिमा पर गुरु पूर्णिमा महोत्सव सोल्लास मनाया गया। दो दिन पूर्व से ही स्थल पर दूरदराज से श्रद्धालु जनों के आने का क्रम प्रारम्भ हुआ जो महोत्सव के दो दिवस उपरान्त तक बना रहा। महोत्सव की पूर्व संध्या से ही स्थल के सिंह द्वार एवं कूटदंत विनायक मंदिर के साथ ही मुख्य समाधि स्थल पर विद्युत, झालरों द्वारा आकर्षक सजावट किया गया था। भक्तों के इष्टदेव पीठाधीश्वर महाप्रभु पर्व की पूर्व रात्रि को ही स्थल में पधार चुके थे, जिससे श्रद्धालुगण उत्साह एवं उमंग के साथ हर हर महादेव के जयकारे के साथ क्रमबद्ध पंक्ति में अघोराचार्य निवास में श्रीचरण का दर्शन लाभ पाते रहे। स्थल के सिंह द्वार पर प्रशासन द्वारा पुलिस जनों की व्यापक व्यवस्था किया गया था एवं सिंह द्वार के सामने का ''बाबा कीनाराम मार्ग'' ऐहतियात के तौर सुगमता हेतु यातायात को पुलिस द्वारा अवरुद्ध कर दिया गया था ताकि गुरुपूर्णिमा के अवसर पर भक्तों, श्रद्धालुओं को असुविधा का सामना न करना पड़े। इसी प्रकार अग्नि शमन बल, जल टैंकर के साथ ही प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था का भी व्यापक प्रबंधक किया गया था। दोनों सड़क के मध्य में दुकानदारों के द्वारा विविध सामान सजाकर मेला का स्वरूप प्रदान किया जा चुका था। स्थल के अन्दर पूर्व से ही ठहरे भक्तों ने समाधि की परिक्रमा, स्थल के अंदर बारादरी, स्थल के भंडार कोण पर नवनिर्मित तीन मंजिला भवन अन्नपूर्णा हाल के चारों मंजिलों के अलावा प्रांगण में भी अपने-अपने सुविधानुसार प्रसाद ग्रहण कर रात्रि विश्राम किया।

दूसरे दिन प्रात: भक्तों के गगनभेदी जयघोष के मध्य श्री चरण के द्वारा समाधियों के पूजन के पश्चात् अखण्ड धूनि की विधिवत पूजा-अर्चना सम्पन्न की गयी। तत्पश्चात् श्रीचरण पीठाधीश्वर परम पूज्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के द्वारा भक्तों/शिष्यों के सर्वमंगल एवं कल्याण हेतु धूनि के उत्तर निर्धारित स्थान पर आसन ग्रहण किया गया। श्रीचरण-आसन के ठीक ऊपर अभय एवं वरद मुद्रा में अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी एवं पूज्यपाद भगवान अवधूत राम जी के चित्र एवं प्रतिमा को फूलों से सजाया गया था। जिससे त्रिदेव के एकाकार हो जाने का साक्षात् भाव उत्पन्न हो रहा था। श्रीचरण के आसन ग्रहण करने के पूर्व से ही भक्तों की कतार अनुशासनबद्ध ढंग से चेहरे पर कृतज्ञता का भाव एवं हाथ में पुष्प लिये जयघोष से आनन्दित हो रही थी। महिला एवं पुरुष स्वयं सेवकों ने निर्धारित गणवेष में श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु आत्मीय ढंग से निरन्तर कार्यशीलता बनायी रक्खी। श्रीचरणों के आसन ग्रहण करते ही भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा एवं हर हर महादेव के लगातार जयघोष के मध्य अनवरत अपराह्न डेढ़ बजे तक श्रद्धालुओं ने श्रीगुरुचरण का भरपूर दर्शन कर परिवार सहित अपने को कृत्य-कृत्य किया। दर्शनार्थियों तथा श्रद्धालुओं को दर्शन के पश्चात् क्रम से महाप्रसाद स्वरूप वितरित हो रहे, हलुआ एवं घुंघनी का रसास्वादन कराया गया। स्वयं सेवकों के साथ ही भक्तजनों को गुरुपूर्णिमा की पवित्र पावन वर्षा रूक रूक कर सराबोर करती रही; जिससे हर हर महादेव के जयघोष में अतिरिक्त उत्साह की वृद्धि देखती ही बनती थी। प्रात: से अपराह्न तक अनवरत दर्शन के पश्चात् बाद दोपहर स्वयं सेवकों के सादर आग्रह पर ''हर हर महादेव'' एवं संतों के जयकारे के गगनभेदी जयघोष के मध्य श्रीचरण के द्वारा अघोराचार्य निवास में प्रस्थान किया गया। ऊपर कक्ष में भी दस मिनट के अन्तराल के पश्चात् शेष बचे श्रद्धालुओं ने दो कतार में होकर सायं चार बजे तक गुरुदर्शन का सिलसिला अनवरत जारी रक्खा। बाबा कीनाराम की समाधि से लेकर परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी की निर्माणाधीन समाधि तक श्रद्धालुओं ने बड़े ही श्रद्धाभाव से दर्शन-पूजन कर पवित्र विभूति के ऐश्वर्य को माथे से लगाया। पूर्वाह्न ग्यारह बजे से अन्नपूर्णा हाल प्रसाद पाने वालों भक्तों एवं सेवार्थ उपस्थित स्वयं-सेवकगणों से गुंजायमान बना रहा। जहाँ हर पंक्ति के प्रसाद ग्रहण करने के पूर्व जय बाबा कीनाराम एवं हर हर महादेव का जयघोष स्थल को पूर्णत: यज्ञमय बनाये रक्खा। स्थल में बोधिकल्प के एक तरफ माला, लाकेट, अघोर संतों के चित्रों के साथ ही अघोर साहित्य एवं स्थल द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियों के स्टालों पर भक्तों की भीड़ देर रात तक बनी रही। चोर, उचक्कों से सतत सावधान रहने एवं बच्चों का साथ न छोड़ने, खोया-पाया आदि का संचालन सूचना प्रसारण केन्द्र से वरिष्ठ ब्रह्मनिष्ठ औघड़ भक्त श्रीबृजभूषण सिंह एवं सहयोगियों द्वारा ध्वनि विस्तारक यंत्र से लगातार करते हुए व्यवस्था को संभाला जाता रहा।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सायं चार बजे से बारादरी में अघोर गोष्ठी हेतु भक्तों द्वारा स्थान ग्रहण किया जाने लगा तथा एक ओर श्रद्धालु महिलायें दूसरे तरफ स्थान ग्रहण किये पुरुष श्रद्धालुओं द्वारा ''अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरो: परम्'' की ध्वनि उच्चारित की जाती रही। श्रीचरण पीठाधीश्वर जी के बारादरी में पधारते ही ''हर हर महादेव'' के जयघोष के द्वारा श्रद्धालु एवं भक्तों ने गुरुभक्ति से ओतप्रोत होकर समवेत स्वर से श्रीचरण का स्वागत

शेष पृष्ठ दो पर

गुरु पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा के पूर्व संध्या दिनांक ३० जुलाई २०१५ के पावन अवसर पर अघोर सेवा मण्डल के अन्तर्गत गिरनार आश्रम, दिलदारनगर, गाजीपुर में अघोर भक्तों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पीठाधीश्वर जी के द्वारा अपार जन समूह एवं भक्तों के मध्य उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया गया। 'हर हर महादेव' के जयघोष के साथ उपस्थित जनसमुदाय के द्वारा भक्तिभाव से भावविभोर होकर श्रीचरण का दर्शन लाभ लिया गया एवं अपने को कृतार्थ किया गया।

आश्रम में मुख्य रूप से अघोरभक्त सर्वश्री रणजीत सिंह (एडवोकेट), रमेश सिंह, सी०वी० शुक्ला, अरविन्द सिंह, जे०पी० सिंह आदि उपस्थित थे।

राष्ट्र ऋण

इस वर्ष १५ अगस्त २०१५ को स्वाधीन भारत की ६९वीं वर्षगाँठ मनायी जा रही हैं। राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र को सम्बोधित किये जाने की परम्परा रही है। स्वाधीनता दिवस को राजधानी में लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराकर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा राष्ट्र को उद्‌बोधित किया जायेगा। राष्ट्र को उद्‌बोधन में प्रधानमंत्री जी द्वारा देश की दशा एवं दिशा की स्थिति के क्रम में अगले कार्यक्रमों एवं नीतियों को उद्‌घाटित किये जाने की भी परम्परा रही है। जिसे स्वाधीन भारतवर्ष की आम जनता द्वारा ध्यान से सुना एवं समझा जाता है।

विदित हो कि इस वर्ष पावन गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अघोर गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वर्तमान पीठाधीश्वर जी द्वारा भी अपने देश को कठिन परिस्थितियों से गुजरना बताया गया है। हम अवगत है कि वर्तमान समय में जिस प्रकार आतंकवाद, अलगाववाद, आसुरी शक्तियाँ, राष्ट्र को हर तरह से निर्बल व कमजोर करने में लगी हुई हैं, वह अत्यन्त भयावह दृश्य उपस्थित कर रहा है। वर्तमान समय में हमारी मातृभूमि नाना प्रकार के झंझावतों से दो-चार हो रही है। धर्म सम्प्रदाय के नाम पर मानव ही मानव का शत्रु बनकर मानवता का सर्वनाश करने पर आमादा है। राष्ट्र का विकास न हो करके इन्हीं आसुरी शक्तियों के निर्मूलीकरण में हमारी अपार सम्पदा एवं जन धन की बलि देनी पड़ रही है। यद्यपि राष्ट्र भावना जागृत करने में औघड़ अघोरेश्वरों ने जनमानस में समय-समय पर भरपूर हुँकार भरा है। परमपूज्य भगवान अवधूत राम जी ने मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं गुरु ऋण के साथ ही राष्ट्र ऋण से भी उऋण होने के दायित्व से जनमानस को अक्सर अवगत कराते रहते थे।

अखण्ड भारतवर्ष कम से कम इस क्रम में भाग्यशाली रहा है कि अंग्रेजों के शासन काल के दौरान भी जब-जब राष्ट्र पर, राष्ट्र की निर्दोष भोलीभाली जनता पर अत्याचार व आक्रमण हुआ है। तत्समय के क्रान्तिवीरों, कवियों के द्वारा अपनी वाणी एवं लेखनी से जनमानस में राष्ट्रीयता का संचार किया जाता रहा है। ऋषि तुल्य बंकिमचन्द्र चटर्जी एवं कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के द्वारा तत्समय ''वन्देमातरम्‌ एवं जनगणमन'' के गीत व गान को गाकर जनसमूह को राष्ट्र भावना से ओतप्रोत किया गया। कालान्तर में हमारे युगपुरुषों लाल, बाल, पाल एवं समस्त क्रान्तिवीरों ने वेद, पुराण, कुरान, उपनिषदों, शास्त्रों, गुरुवाणी में एक ही देवता को देखा, वह थी राष्ट्र प्रेम व मातृभूमि के प्रति सच्ची श्रद्धा। सभी धार्मिक एवं आध्यात्मिक ग्रन्थों में उन्हें एक ही धर्म के दर्शन हुए वह था देशभक्ति। उन सबकी आध्यात्मिक चेतना का लक्ष्य था राष्ट्र प्रेम एवं मातृभूमि प्रेम सभी धर्मों से बड़ा है।

साथ ही साथ शरीरधारी मानव के रूप में दैवीय शक्तियाँ भी हमारे राष्ट्र में अवतरित होती रही है एवं मानवता का उद्धार करती रही हैं। अघोर कीनारामी परम्परा का प्रारम्भ भी ऐसे ही युग में तब हुआ था जब यवनों, नवाबों, शासकों, जमींदारों से पीड़ित जनमानस कराह रहा था। बाबा कीनाराम जैसे इष्टदेव की आराधना जनता की महती आवश्यकता बन गयी थी। बाबा कीनाराम जी ने तत्समय पूरे भारतवर्ष में घूम-घूम कर अलख जगाया एवं अत्याचारियों को उनके कार्य से विरत कर जनमानस को शक्ति सम्पन्न कर शान्ति प्रदान किया।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान्‌ के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

गुरु-पूर्णिमा महोत्सव

किया। श्रीचरण के द्वारा सर्वप्रथम अघोराचार्य बाबा कीनाराम की मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया। तदोपरान्त दीप प्रज्वलित करने के पश्चात्‌ भक्तों के समक्ष अघोरेश्वर के द्वारा आसन ग्रहण किया गया। गोष्ठी के शुभारम्भ में ध्वनि विस्तारक यंत्र पर शब्दों के धनी औघड़ कृपा-पात्र श्री सूर्यनाथ सिंह जी के द्वारा वरिष्ठतम औघड़ भक्त श्री श्यामनारायण पाण्डेय जी को परमपूज्य पीठाधीश्वर जी के माल्यार्पण हेतु तुमुल ध्वनि एवं हर हर महादेव के मध्य उद्‌घोषित किया गया। माल्यार्पण के पश्चात्‌ गोष्ठी के संचालन दायित्व के निर्वहन हेतु अघोर भक्त श्री गंगेश पाण्डेय जी, एडवोकेट का नाम प्रस्तावित कर उन्हें मंच पर सादर आमंत्रित किया गया। श्री पाण्डेय जी के द्वारा श्रीचरण के समक्ष श्रद्धावनत के साथ ही गोष्ठी संचालन का दायित्व संभाला गया; साथ ही वक्ताओं, श्रोताओं एवं समस्त श्रद्धालुओं का स्वागत करते हुए समय सीमा की गरिमा को भी इंगित किया गया। गोष्ठी के प्रारम्भ में मंगलाचरण हेतु मुम्बई से पधारे बालक श्री गुरुहरि चरण को आमंत्रित किया गया। बालक ने गुरु के समक्ष नतमस्तक होकर अपनी ललित वाणी में **''दृश्य वही, दृष्टा वही, नैनन को प्रकाश; गुरु वही, गुरुमुख वही गुरुपद का विश्वास''** को प्रथम पुष्प के रूप में पद्यांश अर्पित किया।

मंगलाचरण के पश्चात्‌ धरौली चंदौली अघोर शाखा के संचालक वाक्यधनी श्री सूर्यनाथ सिंह जी को वक्ता के रूप में मंच पर आमंत्रित किया गया। श्री सिंह के द्वारा सर्वप्रथम समस्त श्रद्धालुओं को परमपूज्य पीठाधीश्वर जी के सम्मुख ही उनका संदेश सुनाया गया, जिसमें भक्तगणों को पूज्यपाद बाबा के साथ रहने, उनसे कंधा से कंधा मिलाकर चलने, पूज्य बाबा का हाथ बनने का आह्वान किया गया तथा भविष्य में आध्यात्मिक क्रान्ति के अलख जगाने का संकेत किया गया। श्री सिंह के द्वारा उनके व्यक्ति उद्‌बोधन में युवाओं को बदलने हेतु अनुप्रेरित किया गया। अन्त में अघोर भक्त श्री सिंह के द्वारा समस्त श्रद्धालुओं को सिंहस्थ महाकुम्भ नासिक में दिनांक १५ अगस्त २०१५ से ३० सितम्बर २०१५ तक प्रतिभाग हेतु जानकारी दी गई।

गोष्ठी के अगले वक्ता के रूप में आजमगढ़ से पधारे औघड़ भक्त ब्लाक प्रमुख श्री रामजनम सिंह ने युवाओं को दहेज रहित, विवाह हेतु संकल्पित होने का आह्वान किया। साथ ही समाज में बढ़ते लिप्सा से दूर रहकर कार्यरत रहने की सीख दी गई। अघोर गोष्ठी में अगले वक्ता के रूप में श्री सी०एन० ओझा ने अघोर एवं औघड़ के प्राकृतिक अविच्छिन्नता पर प्रकाश डालते हुए गुरु की महिमा का बखान किया एवं ''बाबा के श्रीचरणों में सौभाग्य का सबेरा है'' शीर्षक गीत को प्रस्तुत कर अपने को कृतार्थ किया।

गोष्ठी में संचालक महोदय द्वारा पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री के०डी० राम जी को मंच पर बुलाया गया, जहाँ उन्होंने औरंगजेब, सिकन्दर महान का दृष्टान्त देते हुए गुरु-शिष्य की परम्परा पर प्रकाश डाला एवं समस्त श्रद्धालुओं का स्वागत किया गया।

वक्तागण के अगले क्रम में प्रोफेसर डॉ० अमरजीत सिंह, चित्रकूट विश्वविद्यालय ने गुरु को सर्वशक्तिमान सिद्ध करते हुए स्वयं को साधन मात्र बताया तथा गुरु वाणी को गाँव गाँव एवं जन-जन तक प्रसारित प्रचारित किये जाने पर जोर दिया।

अगले वक्ता के रूप में श्री ऋषि ज्वाला ने अपनी मनोहारी कविता ''सर्वशक्ति सम्पन्न अघोरी, जगतगुरु, क्रींकुण्ड निवासी'' गाकर समस्त श्रोतागण का मन मोह लिया।

इसके बाद बारी श्री के०पी० सिंह, रजिस्ट्रार बिहार विश्वविद्यालय की थी जिन्होंने अघोर को अपरिमित शक्ति सम्पन्न बताते हुए प्रकृति के दोहन से जन-जन को विरत रहने का सद्‌परामर्श दिया।

अन्तिम वक्ता के रूप में अघोर भक्त पूर्व प्राचार्य हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी श्री गया सिंह जी को मंच पर सादर आमंत्रित किया गया। अपने चिर परिचित सिंहनाद से श्री सिंह ने क्रींकुण्ड के इतिहास की विविध जानकारी देते हुए श्रोतागण को एकसूत्र एवं एकाग्रता में बाँधे रहने में सफल रहे। अन्त में उन्होंने अपनी रचना ''कीनाराम की आत्मकथा'' को शीघ्र पूरी करने एवं जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करने का तथ्योद्‌घाटन किया।

श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर श्रीचरण परमपूज्य पीठाधीश्वर जी की वाणी सुनने को आतुर थे; ज्योंही संचालक महोदय द्वारा बाबा के आशीर्वचन की घोषणा करते हुए निवेदन किया गया, श्रोतागण ने समवेत स्वर से ''हर हर महादेव'' का कई बार जयघोष कर इस पूर्ण पूर्णिमा यानी गुरु पूर्णिमा पर अपने गुरु की वंदना की गयी। परमपूज्य पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम रामजी के द्वारा अपने संक्षिप्त एवं सारगर्भित आशीर्वचन में सर्वप्रथम क्रींकुण्ड अवस्थित सभी समाधियों, आत्माओं को प्रणाम किया गया। तत्पश्चात्‌ गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर सभी उपस्थित एवं अनुपस्थित भक्तों को शुभकामना एवं आशीर्वाद देते हुए राष्ट्र को वर्तमान में एक विचित्र परिस्थितियों से

शेष पृष्ठ तीन पर

पूज्य सरकार का आशीर्वचन

धर्म बंधुओं एवं माताओं, बच्चों!

आपके बीच आकर बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं आपके स्नेह का आभारी हूँ। आप दीनदार बने दीन ईमान को मानने वाला ही अच्छा है। मनुष्य जन्म पाने पर मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने धर्म ईमान को न खोवे। ऐसे जो समय बिताते हैं कि वे देव तुल्य पूजनीय सराहनीय है। दु:ख, भय, लज्जा, दीनदार को न सतायेगा। बेईमान दु:खी होता है। अपमानित होता है। मनुष्य को धर्म में आस्था रखनी चाहिए। सबमें विश्वास दिलाना होगा, यह मूल्यवान धन है। पुत्र, पौत्र भी विश्वास के प्रभाव में मालिकाना छीन लेते हैं। कवनिहुँ सिद्धि की बिनु विश्वासा, देवता मंत्र भी विश्वास से मिलेंगे। आपका विश्वास वटवृक्ष जैसा दृढ़ होना चाहिए वहीं बहुत से लोग छाया आनन्द पावेंगे। मनुष्य को कर्त्तव्य होना चाहिए। बेकार मनुष्य का दिमाग शैतान का घर है, बेकार ही व्यसनी होता हैं, इसलिए हरिकथा, कीर्तन, सज्जन संग लाखगुना अच्छा है। व्यसन से जीवन का ह्रासमय होता है पूर्व कृत कर्म तो भूत बन जाते हैं उसे छोड़े क्योंकि याद करते ही आपके सामने आकर सतावेंगे। आप बुरे काम जो बन पड़ेगे उन्हें भूल जाय। जीवन करीब ३० हजार दिन का होगा। एक ही शताब्दी के अन्दर बुरा भला सब भोग कर चले जाना है। कर्म सोचकर तौल कर करें। बहुत लोग जो यहाँ हैं वह करीब आधा समय बिता चुके हैं। यदि आज भी पीछे देखने के बजाय आगे बढ़े तो उत्साह मिलेगा। आगे बढ़ने में कभी तो नहीं होती। थोड़े समय में भी चेतकर महात्मा लोग ईश्वर को पाकर विमल कीर्ति छोड़ गये हैं। देवता मंत्र या गुरुजन विश्वास की वस्तु है बिना विश्वास फल न होगा।

गुरुपीठ होता है वह पक्षी, लता, पेड़ भी हो सकता है। महान से भी श्रद्धा के अभाव में कुछ न मिलेगा। लकड़हारा की कहानी का दृष्टान्त दिया। रेजर ने लकड़हारा का चमत्कार देखा जब गिरती थी वह अनायास टांगी पा लेता था उसने आकर्षण मंत्र का रहस्य बताया। साहब ने विद्या पाना चाहा तो लकड़हारा ने कहा श्रद्धा के अभाव में आपको मंत्र का लाभ न होगा। श्रद्धा देखकर उसने मंत्र बताया। वह ६ माह की अवधि को जोड़ कर दु:खी रहने लगा। अपने पत्नी को उसने परीक्षा के लिए अफसर के पास भेजा। अफसर ने गुरु पत्नी का स्वागत सिद्धि पाली। इसी प्रकार श्रद्धा, विश्वास रखकर आप चंडाल पीठ से भी सिद्धि पा सकेंगे। इसके लिए आपको दीनदार ईमानदार श्रद्धा, विश्वास रखने से संकल्प सिद्धि प्राप्त होगा। बुरे काम से आदमी किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो जाता है। परमात्मा की कृपा से बुरा भला बन जाता है। उसकी कृपा के हम सभी आकांक्षी है। इसीलिए हम उसकी प्रार्थना पूजा आदि करते है। मैंने व्यवहारिक विचार आपके सामने रखा है इसको अपनाकर आप लाभ उठा सकते हैं। आपको अपने धर्म में श्रद्धा बन्धु, बांधवों में प्रेम तथा सभी उन्नति मिले इसी का मैं आशीर्वाद करता हूँ।

भारत के भावी पीढ़ी को स्वतंत्रता दिवस पर अवधूत भगवान राम का दिव्य संदेश

आदर्श ज्ञान कुंज सं० महाविद्यालय, रसूलगढ़, सारनाथ, वाराणसी में स्वतंत्रता दिवस पर श्री सर्वेश्वरी समूह के संस्थापक एवं अध्यक्ष पूज्य अवधूत भगवान श्री राम ने स्वतंत्रता की एक अनुपम व्याख्या दी जो कि आज के त्रस्त जगत के लिए उत्मुक्तारूपी महामोक्ष नवीन आदर्श है।

बीते अतीत, समर्थ गुरु रामदास का ध्वजोत्तोलन द्वारा सजीव करते हुए भावी बालक शिवाओं की कल्पना करते हुए अवधूत भगवान श्रीराम ने कहा- ''मेरे देश के भविष्य और कर्णधार प्रह्लाद स्वरूप बच्चों ! तुम्हें ही देश की राजनीति को ''प्रह्लादीय'' ''आध्यात्मिक'' नीति से और शासन को अनुशासन महामंत्र से संवारना और संभालना है। समाज सेवा और नेतृत्व का मूल मंत्र है ''पवित्रता''। सम्मान का आधार है। शारीरिक, मानसिक, स्वच्छता। बच्चों की संगठित शक्ति के द्वारा एक बार प्रह्लाद ने राष्ट्रीय क्रान्ति, आध्यात्मिक क्रान्ति, आध्यात्मिक शान्ति द्वारा समाज और मानवता को देवत्व की कान्ति दी, मैं आशीष देता हूँ कि तुम सब पूर्णता में समर्थ हो सको। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जब तुम सब पूर्ण बनो तो तुम सबकी पूर्णता को हम प्यार करें, प्रसन्न होवें और तुम्हारा सम्मान करें। तथास्तु।

गुरु-पूर्णिमा महोत्सव

द्वितीय पृष्ठ का शेष

गुजरना कहा गया। सर्वकल्याण हेतु समस्त श्रद्धालुओं को दृढ़ निश्चयी, एकनिष्ठ होने तथा अपने कृत्यों, आचरणों पर सतत दृष्टि रखते हुए छोटे-छोटे संकल्पों को लेकर जाने तथा उसे वर्ष पर्यन्त पूरा करते रहने पर जोर दिया गया। आशीर्वचन, आशीर्वाद के साथ बाबा ने सभी भक्तगणों के प्रति शुभकामना प्रकट किया।

गोष्ठी के अन्त में युवा अघोर भक्त श्री अजीत सिंह के द्वारा चरण पादुका स्टैण्ड, वाहन स्टैण्ड पर कार्यरत समस्त स्वयं सेवकों के साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस व्यवस्था, श्रद्धालुओं, दर्शनार्थियों एवं श्रोतागण का आभार प्रकट किया गया एवं श्रीचरणों में शीश नवाया गया।

सायं प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात् भक्तों, श्रद्धालुओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित था जिसका उपस्थित श्रद्धालुओं द्वारा देर रात्रि तक भरपूर लाभ उठाया गया। अघोर लीला एवं भजन गीत कलाकार के रूप में औघड़ भक्त सर्वश्री मदन राय, घुंघरू, नीरज, डॉ० विजय कपूर, विक्की छावड़ा, पुनीत पाण्डेय एवं चन्दन के द्वारा अपने स्वर से स्थल को गुंजायमान एवं झंकृत किया गया। आध्यात्म एवं भक्ति से भरे पूरे स्थल में भक्तजनों के द्वारा सुरम्य अघोर लहरों में एकाग्र होकर गोता लगाया गया एवं बीच-बीच में ''हर हर महादेव'' का जयघोष भी किया जाता रहा। वाद्य संगत में सर्वश्री बलराम मिश्रा, पप्पू, चन्द्रशेखर, वीरेन्द्र एवं सिकन्दर जी का सराहनीय योगदान समस्त उपस्थित श्रोतागण द्वारा सराहा गया।

गुरु पूर्णिमा पर्व, अन्य कार्यक्रमों एवं गोष्ठी के सफल संचालन में अप्रतीम योगदान स्थल के व्यवस्थापक अघोर भक्त श्री अरुण सिंह जी, श्री उदयभान सिंह जी के अलावा सर्वश्री संत, सर्वेश जी, नाना, वीरेन्द्र, कान्ता, गुंजन, गोलू, नवीन, गोवर्धन आदि के द्वारा किया गया।

हिन्दू धर्म जैसा उदार और चरित्रवान है वैसी उदारता का प्रदर्शन भी होना चाहिये

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

पिछले अंक का शेष

धर्मबन्धुओं!

मैं तो आप लोगों से कहूँगा कि अपने अर्थ के बारे में सोचें आपका मुल्क परिश्रम करने से बहुत दूर रहता है। लोग सहज में कोई चीज कोई वस्तु प्राप्त करने की कांक्षा रखते है। इस तरह की प्रवृत्ति वाले मनुष्य ज्यादा ईश्वर, देवी, देवता की ओर झुकते हैं। यह एक तरह की उनकी बड़ी कमजोरी है। उनका हृदय दुर्बल रहता है। यदि वे परिश्रम करें, अर्थ उनके साथ हो तो धर्म करने में भी, उदारता करने में भी, नि:संकोच कर सकते है। तो मैं आप सभी सज्जनों से आशा करूँगा और विश्वास रखता है कि आप लोग बहुत कुछ आने वाले वक्त का स्वागत करेंगे। तो वक्त जो आयेगा उससे यह जो जाति, कास्ट का आडम्बर जो आपको दु:ख देता है, सताता है उसको यहाँ के लोग तोड़ेगें। धीरे-धीरे वह टूट भी रहा है। वह बड़ा दु:खदायी है। उसी ने हमारे समाज को विपरीत गति, विपरीत मार्ग दिया है। इसलिये हम समाज के उस व्यक्तित्व का, उस मूर्ति का स्वागत करें जो हमारे आने वाले लोगों के देने के लिये तैयार हों और देते हो।

भूतकाल की बातों को जब आप सोचेंगे तो वह शैतान है, वह आपको सताता है, उससे आप संतप्त होइयेगा। आपका मनोबल गिर जायेगा। आप किसी चीज की सफलता के लिये प्रयत्न करते हैं पर असफल हो जाते हैं। क्योंकि आपमें चौबीसों घंटे सहस्रों संकल्प होते हैं। उसमें सबकी पूर्ति नहीं होती। दो चार संकल्पों की पूर्ति हो भी जाय तो भी लोग बहुत क्षोभित रहते हैं। इसका कारण है कि नाना प्रकार के अविश्वास विश्वास के रूप में घर कर गये हैं। आप उसे छोड़ेंगे नहीं तो जो यथोचित विश्वसनीय विश्वास है, उसे नहीं प्राप्त करियेगा क्योंकि आप अपने समाज को, देश की जनता को पहले विश्वास देते हैं तब विश्वास प्राप्त करते हैं और उनके विश्वास का आदर करते हैं।

मैं देखता हूँ एक ही घर में दो भाई हैं एक भाई का एक पर विश्वास नहीं रहता। कभी वह चाभी छीनता है तो कभी वह। तो जब अपने परिवार कुटुम्ब में विश्वास नहीं दे पाते हैं तो उस पवित्र भगवान, देव का विश्वास कैसे प्राप्त करेंगे? नहीं, विश्वास प्राप्त करने का, विश्वास देने का, उसे जताने का आज दिन है। आप जानते हैं कि दो चार की गवाही से एक मुल्जिम, एक कत्ली भी छोड़ दिया जाता है। पर जब आपकी इन्द्रियाँ, आपका ही मन, आपकी गवाही नहीं दे रहा है तो इस परिस्थिति में आप क्या करेंगे। जब आपका विचार, आपके कर्म, आपकी उच्च भावनायें आपकी गवाही देने लगेंगी, आप उसको विश्वास देने लगियेगा तभी तो आप परमात्मा का भी विश्वास प्राप्त करियेगा। आपके मन में जो नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उठा करते हैं, वे शान्त होंगे। आपके मन में उतना ही संकल्प उठेगा जितना की आवश्यकता है और जितना की आप पूर्ति कर सकते हैं।

इसके साथ ही आप जो शान्तिपूर्वक बैठ रहे और मौन चित्त होकर काफी देर तक सुनते रहे, उसके लिये आप विशिष्ट जनों को आशीर्वाद ना देकर मैं आपका कृतज्ञ हूँ।

यह अनुचित कर्मों का प्रभाव है जो भय के रूप में हमारे पीछे लगा रहता है।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

अभी इस परम पवित्र पर्व के अवसर पर जिन लोगों ने अपने विचार व्यक्त किया, उन्हें धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ अपने जीवन में गुरु या शास्त्र या बुजुर्गों के बारे में भगवान बुद्ध ने कहा है कि इन्हें तभी मानो जब तू खूब निश्चय कर लो, विचार कर लो। जो विचार करने की क्रियायें है उन्हें समझ लो तुम। न मानने के लिये इन्हें हम नहीं कहते। इस अवसर पर हमलोग एकत्र होकर जो विचार गोष्ठी करते हैं। मंत्र, क्रिया, देवता, देवी, देव, वीर्य, ऐश्वर्य इत्यादि के बारे में इसे मामूली नहीं समझें। यह थोड़ा नहीं है। इसका भी एक अलग पुण्य है, वह हम लोगों को अलग से प्राप्त होगा। जो विचार कर कहे हैं, इसका अलग है। वह अलग से प्राप्त होगा। जिन पवित्र शब्दों को वायुमण्डल में प्रयोग कर रहे हैं, उसका अलग होगा। यदि हम ऐसा ही करते रहें, लगे रहें तो बहुत थोड़े दिनों में दैवी गुणों से सम्पन्न हो सकते हैं। जब दैवी गुणों से सम्पन्न होंगे तो कितना शीतल, कितना शान्त हमारा छाया होगा, जिसके नीचे दुःखी, गरीब, विपत्ति, परेशानी में व्यक्ति आकर आराम कर सकते हैं। इस तरह की हमारी दृष्टि सदैव रही तो मैं कहूँगा कि हमारी छाया हमें भी संतृप्त करेगी और हमारे नजदीक आकर दूसरा भी विश्राम पायेगा उसे भी संतृप्त करेगी।

हमलोगों के देवी के प्रति, ईश्वर के प्रति अपने, आत्मा के प्रति, गुरु के प्रति सत भावनायें जब जब उत्पन्न होती है, तब तब आप सोचिये उसका आविर्भाव हमारे शरीर में हो गया है। जब देवी के प्रति इस तरह की भावना उत्पन्न हुआ है तो समझना चाहिये कि गुरु का इस हमारे शरीर में आविर्भाव हुआ है। आत्मा के प्रति जब इस तरह की भावना होती है तो आत्मा का हमारे भीतर आविर्भाव हुआ है। आविर्भाव से मतलब समझते हैं न। शरीर में उसका प्राकट्य। जैसे एक विषयी से किसी सुन्दरी की चर्चा की जाय तो उसका मन कम्पित सा हो जाता है। उसका मनलोलुप सा हो जाता है। यानि उस विषय का उसमें प्रादुर्भाव हो गया है, प्राकट्य हो गया है। चर्चा करते हैं। जैसे इमली की चर्चा करने से जबान पर पानी आ जाता है। इमली, इमली जपिये अभी जबान पर पानी आ जायेगा। इसी तरह विषय का जहाँ आप स्मरण किये और उसके थोड़ा सम्वेदना से ही उसका प्रादुर्भाव होने लगता है। यदि ज्यादा कुछ प्रयत्न किये तो आप भावावेश में हो जाते हैं और इतना भावावेश में हो जाते हैं कि मन रोकता भी नहीं काबू से बाहर हो जाता है।

जब इन सब तुच्छ वस्तुओं का प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ सकता है तो गहन परम पवित्र वस्तु है, गुणवान वस्तु है, जो हमारे जीवन का मूल्यवान वस्तु है, उसका स्मरण करने से, उसका जप ध्यान करता हूँ, उसका जब मैं चिन्तन करता हूँ तो उस क्षण का जो मेरा मन, मस्तिष्क और हृदय होता है, वह उसी का प्रादुर्भाव हुआ है, यही समझना चाहिये। यह एक बहुत ही साधारण ज्ञान से इसे हमलोग समझ सकते हैं। मैं तो यही कहूँगा कि इन सब गुणों को आपका जो विषय है, इन्द्रियों का जो भोग है। तमाम मल-मूत्र का जो खजाना है, जिसके आलिंगन के लिये हम चेष्टा करते हैं, अपना मान मर्दन करते हैं, अपने श्रीहत हो जाते हैं और नाहक व्यर्थ मन विचित्र सा उड़ता रहता है, जिसका नाहक हमारे ऊपर प्रभाव पड़ता है, इसकी कुछ कमी करें। हम यह नहीं कहते हैं कि इसको रोक दिया जाये। हम यह कहते हैं, जो सदैव चल रहा है तीनों दिन उसमें से करीब बीस दिन तो कम ही करें। यदि वह बीस दिन बचा रहेगा तो दोनों के पलड़ा से तौल में थोड़ा अधिक होगा। जब अधिक होगा तो आपका मन, मस्तिष्क, हृदय इतना स्वच्छ रहेगा, इतना आप निर्भय रहियेगा कि आपको भय बिल्कुल व्यापेगा नहीं। भय हमको किसी तरह क्यों व्यापता है? क्या कारण है? भय कमजोरी है। उचित कर्म जो है उसे नहीं किये हैं अनुचित कर्मों का यह प्रभाव है जो भय के रूप में हमारे पीछे लगा रहता है। पिशाच की तरह हमको घेरे रहता हैं, छोड़ता नहीं। भय हमें हर तरह का दुःख देता है। वह हमें सात्वना नहीं दे सकता, सहयोग नहीं दे सकता। वह जो पवित्र रास्ता है उस पर जाने के लिये हमें प्रेरित नहीं कर सकता। वह इतना भयभीत कर देता है कि नाना प्रकार की लज्जा आ जायेगी, नाना प्रकार का घृणा और द्वेष आ जायेगा और फिर ये सब इकट्ठे ही आक्रमण हो जाता है, मन, मस्तिष्क, हृदय विकृत हो जाता है और उस मनुष्य की आत्मा मर जाती है उनकी अवस्था पचास, साठ वर्ष के बूढ़े जैसे हो जाती है। उनकी आत्मा तो मर जाती है। बूढ़े लोग द्वार पर घर पर बैठे-बैठे कूढ़ते रहते हैं। घर के जो बच्चे हैं, बहु हैं और भी जो हैं उन पर कूढ़ेंगे कि ऐसा नहीं किया। साठ सत्तर की अवस्था हुई अब तो उनकी आत्मा मर चुकी। अब कोई कर्म करने की उसमें ताकत नहीं है। पूर्व के जो कर्म उनके हैं वो शैतान की तरह लगे हुए हैं, नाच रहे है। भयभीत किये हुए हैं। पहले के लोग थे जो जाते थे वनों में, अरण्यों में तपस्या करने के लिये। इस समय के वृद्ध क्यों नहीं जाते? क्योंकि वे संकुचित हैं, भयभीत हैं, लज्जा में पड़े हुए हैं, संकोच में पड़े हुए हैं। हम यह कैसे कर दें, वह कैसे कर दें। अब उनकी ऐसी अवस्था हो जाती है कि अपने लड़के के नाती, बच्चे खेलाते रहे। यदि ऐसा भी न करें तो उनको खाना, रोटी, पानी भी बंद कर दिया जाता है। उस रोटी के लालच में बच्चे खिलाते रहते हैं। दरवाजे की रखवाली करते हैं। कोई साधु, फकीर, भीखमंगा भी आ गये तो उनसे चिढ़ेंगे कि कहाँ से तुम बवाल आ गये हो। हम तो घर का हाल जानते हैं सब। तो आप देखिये कि यह भय जो है, लज्जा जो है, हमारे जीवन को निरर्थक बनायेगा। यह क्यों हम में उत्पन्न होता रहता है? इन्हीं इन्द्रियों के इच्छानुसार भोगों को देते रहे हैं। यदि इनको इच्छानुसार इनके भोगों को न दें तो ये कभी हमको भयभीत नहीं कर सकते। मरणशैय्या तक ये भयभीत नहीं कर सकते। अभी आप प्रसन्न रहेंगे, खुश रहेंगे, संतुष्ट रहेंगे। आप तभी अपने को पूर्ण पायेंगे यह सब बढ़िया से बढ़िया माँग है। इसे इस नवरात्र पर जो सुने, जाने उसे करें। यह जीवन के लिये सुख एवं सम्पन्नता प्रदान करेगा। अपने जीवन में अभाव नहीं खटकेगा। जहाँ देखेंगे, जहाँ बैठेंगे वहाँ अपने जीवन में भाव ही भाव रहेगा। क्योंकि कभी कुभाव किये ही नहीं। सभी लोगों से भाव से मिलना। सब लोग बन्धु-बान्धव, कुटुम्ब सब लोग भाव से मिलते हैं जो लोग, कोई भी हो, शिष्य, चेले के सब प्रसन्न हैं। जब कुभाव होगा। तभी अभाव होगा। जब अभाव होगा तो उसके लिये कभी भाव नहीं,अभाव ही अभाव रहेगा। जब भाव नहीं प्राप्त होगा तो भय प्राप्त होगा, तो लज्जा आयेगा। लज्जा आयेगा तो घृणायें, शंकायें ईर्ष्यायें आक्रमण कर देती हैं तो मनुष्य का मस्तिष्क विकृत हो जाता है। मैं तो आशा करूँगा, आशा भी करता हूँ कि आपलोग इतना अनुष्ठान साधनाव्रत जप, ध्यान, धारणायें अपने को, चित्त को एकाग्र किये पंचशील के प्रति अपने मन में जो विचार चल रहा है अपनी इन्द्रियों के ऊपर धीरे धीरे इसको देख कर मुझे बड़ी खुशी और प्रसन्नता भी हुई है और यह सब कर्म जो है बड़ा पवित्र है। हमारे मुनि साधु ढूँढ़ते चलते है कि हम को प्राप्त हो, यह मिले, हमको करने का हमें शुभ अवसर मिले। यदि यह हमको प्राप्त है, रास्ता हमको बना दिया गया है। अब हम खड़े है चौमुहानी पर तो रास्ता क्यों न चलें। क्यों ही हमारे लिये यह सुलभ है, सुगम है, सबल है। हमारे स्वास्थ्य के लिये हितकर है तो यही कहेंगे कि आप लोग इसके सेवन करें। सेवन में भय का नाश है। भय का नाश होगा तो चित्त में खेदता नहीं होगी। तो आपका चित्त प्रसन्न होगा। प्रसन्न चित्त तो ईश्वर का चित्त है। मलीन चित्त असुरों, राक्षसों का चित्त होता है। जिसका चित्त प्रसन्न है निर्भय है, उसी के चित्त में ईश्वर है। उस वक्त ही ईश्वर का आविर्भाव हुआ है उसमें। तो इस पवित्र नवरात्र पर दो चार शब्द कहा हूँ, मैं आशा करूँगा कि इस पर आप लोग ध्यान देंगे। देखिये न देवी का। हमलोगों का घर सम्पन्न था, सुखी था। सब धन-धान्य भी था, तब भी भीख माँग कर पाँच सात घर से लाया जाता है और कहते हैं कि देवी कुछ नहीं है। भीख माँगकर लाया यश करेगा, पुण्य करेगा। हम वही गरीब हूँ, वही दुःखी हूँ कि हमारे में कोई अभिमान न हो। अपने अभिमान को चूर करने से उनके मन पर एक बड़ी ही उत्तम और पवित्र प्रभाव पड़ता है तो ये जो बड़े उत्तम और पवित्र प्रभाव जो है, गुण जो है, इसका आचरण करें, सेवन करें और हम निर्भय रहेंगे। भय और लज्जा शंकायें हमारे पास नहीं आयेंगी। यदि हम सच्चे हृदय से पंचशील का पालन करेंगे तो।

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, वाराणसी

एवं ''अघोर सेवा मण्डल'' की ओर से .....

नासिक महाकुम्भ मेला 2015 में आपका स्वागत है...

14 अगस्त से 30 सितम्बर, 2015 तक

सम्पर्क करें... 09769373439, 08108434015

पता कैम्प कार्यालय

लक्ष्मण मन्दिर ट्रस्ट कम्पाउण्ड, तपोवन, नासिक, 488, 489 सेक्टर-2-डी, साधुग्राम तपोवन, नासिक (महाराष्ट्र)

अघोर सूत्र

☞ **आप भले ही महापुरुष, सन्त-महात्मा सब कुछ हो जाएँ मगर गुरु के बिना मंत्र की सिद्धि तथा जीवन की सिद्धि असम्भव है।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी